14.10.2018 की अव्यक्त मुरली से
प्रश्नोत्तरी और 84 स्वमान

ब्राह्मण जीवन - अमूल्य जीवन

(Rev. 18-02-84)

प्रश्न - आज कौन किससे मिलने आये हैं?
उत्तर - सदा स्नेह में समाये हुए स्नेही बच्चों से स्नेह के सागर मिलन मनाने आये हैं। जैसे स्नेह से बाप को याद करते हैं वैसे बाप भी स्नेही बच्चों को पदमगुणा रिटर्न देने के लिए, साकारी सृष्टि में मिलने के लिए आते हैं।

प्रश्न-बच्चों के स्नेह की कमाल क्या है?
उत्तर - बाप बच्चों को आप समान अशरीरी निराकार बनाते और बच्चे स्नेह से निराकारी और आकारी बाप को आप समान साकारी बना देते हैं। यह है बच्चों के स्नेह की कमाल। बच्चों के ऐसे स्नेह की कमाल देख बापदादा हर्षित होते हैं।

प्रश्न - बाप बच्चों के गुणों के गीत गाते हैं कि कैसे सदा बाप के संग के रंग में बाप समान बनते जा रहे हैं ऐसे बच्चों को बापदादा क्या कहते हैं?
उत्तर - बापदादा ऐसे फालो फादर करने वाले बच्चों को आज्ञाकारी, वफादार, फरमानबरदार सच्चे-सच्चे अमूल्य रत्न कहते हैं।

प्रश्न - आप बच्चों के आगे यह स्थूल हीरे जवाहरात भी कैसे हैं?
उत्तर - मिट्टी के समान हैं। इतने अमूल्य हो। ऐसे अपने को अनुभव करते हो कि बापदादा के गले की माला के विजयी अमूल्य रत्न मैं हूँ। ऐसा स्वमान रहता है?

प्रश्न - डबल विदेशी बच्चों को कौन-सा नशा और खुशी रहती है?
उत्तर - कि हमें बापदादा ने इतना दूर होते हुए भी दूरदेश से चुनकर अपना बना लिया है। दुनिया बाप को ढूँढती और बाप ने हमें ढूँढा। ऐसे अपने को समझते हो?

प्रश्न - दुनिया पुकार रही है कि आ जाओ और आप सभी नम्बरवार क्या गीत गाते हो?
उत्तर - तुम्हीं से बैठूँ, तुम्ही से खाऊं, तुम्हीं से सदा साथ रहूँ। कहाँ पुकार और कहाँ सदा साथ! रात दिन का अन्तर हो गया ना।

- कहाँ एक सेकण्ड की सच्ची अविनाशी प्राप्ति के प्यासी आत्मायें और कहाँ आप सभी प्राप्ति स्वरूप आत्मायें!

- वह गायन करने वाली और आप सभी बाप की गोदी में बैठने वाले।

- वह चिल्लाने वाली और आप हर कदम उनकी मत पर चलने वाले।

- वह दर्शन की प्यासी और आप बाप द्वारा स्वयं दर्शनीय मूर्त बन गये।

प्रश्न - थोड़ा सा दु:ख दर्द का अनुभव और बढ़ने दो फिर क्या होगा?
उत्तर - फिर देखना आपके सेकण्ड के दर्शन, सेकण्ड की दृष्टि के लिए कितना प्यासे बन आपके सामने आते हैं।

प्रश्न - अभी आप निमंत्रण देते हो, बुलाते हो। फिर क्या होगा?
उत्तर - आपसे सेकण्ड के मिलने के लिए बहुत मेहनत करेंगे कि हमें मिलने दो। ऐसा साक्षात साक्षात्कार स्वरूप आप सभी का होगा। ऐसे समय पर अपनी श्रेष्ठ जीवन और श्रेष्ठ प्राप्ति का महत्व आप बच्चों में से भी उस समय ज्यादा पहचानेंगे।

प्रश्न - अभी आप अपनी श्रेष्ठता और विशेषता को भूल भी जाते हो क्यों?
उत्तर - अलबेलेपन और साधारणता के कारण। लेकिन जब अप्राप्ति वाली आत्मायें प्राप्ति की प्यास से आपके सामने आयेंगी तब ज्यादा अनुभव करेंगे कि हम कौन और यह कौन!

प्रश्न - अभी बापदादा द्वारा सहज और बहुत खजाना मिलने के कारण क्या होता है?
उत्तर - कभी-कभी स्वयं की और खजाने की वैल्यू को साधारण समझ लेते हो - लेकिन एक-एक महावाक्य, एक-एक सेकण्ड, एक-एक ब्राह्मण जीवन का श्वास कितना श्रेष्ठ है। वह आगे चल ज्यादा अनुभव करेंगे।

प्रश्न - ब्राह्मण जीवन का हर सेकण्ड, एक जन्म नहीं लेकिन कैसा है?
उत्तर - जन्म-जन्म की प्रालब्ध बनाने वाला है।

प्रश्न - सेकण्ड गया अर्थात् क्या?
उत्तर - अनेक जन्मों की प्रालब्ध गई। ऐसी अमूल्य जीवन वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। ऐसी श्रेष्ठ तकदीरवान विशेष आत्मायें हो। समझा कौन हो? ऐसे श्रेष्ठ बच्चों से बाप मिलने आये हैं। डबल विदेशी बच्चों को यह सदा याद रहता है ना! वा कभी भूलता, कभी याद रहता है? याद स्वरूप बने हो ना!

प्रश्न - कभी भूल कौन नहीं सकते?
उत्तर - जो स्वरूप बन जाते हैं वह कभी भूल नहीं सकते। याद करने वाले नहीं याद स्वरूप बनना है। अच्छा!

याद-प्यार नमस्ते

ऐसे सदा मिलन मनाने वाले, सदा बाप के संग के रंग में रहने वाले, सदा स्वयं के समय के सर्व प्राप्ति के महत्व को जानने वाले, सदा हर कदम में फालो फादर करने वाले, ऐसे सिकीलधे सपूत बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

सबसे बड़ा भाग्य

पोलैण्ड तथा अन्य देशों से आये हुए नये-नये बच्चों से - सभी अपने को भाग्यवान समझते हो, कौन सा भाग्य है? इस श्रेष्ठ भूमि पर आना - यही सबसे बड़ा भाग्य है। यह भूमि महान् तीर्थ की भूमि है। तो यहाँ पहुँचे यह तो भाग्य है ही। लेकिन अभी आगे क्या करेंगे?

याद के अभ्यास को आगे बढ़ाते रहो

याद में रहना, याद के अभ्यास को सदा आगे बढ़ाते रहना। जो जितना भी सीखे उसको आगे बढ़ाते रहना। अगर सदा सम्बन्ध में रहते रहेंगे तो सम्बन्ध द्वारा बहुत प्राप्ति करते रहेंगे। क्यों?

प्रश्न - आज के विश्व में सभी को क्या चाहिए?
उत्तर - खुशी और शान्ति दोनों चाहिए। तो यह दोनों ही इस राजयोग के अभ्यास द्वारा सदा के लिए प्राप्त हो जायेंगी। यह प्राप्ति चाहते हो तो सहज साधन यह है, इसको छोडना नहीं। साथ रखना। बहुत खुशी मिलेगी। जैसे खुशी की खान मिल जायेगी, जिससे औरों को भी सच्ची खुशी बांट सकेंगे। औरों को भी सुनाना, औरों को भी यह रास्ता बताना।

प्रश्न-बहुत तकदीर की निशानी क्या है?
उत्तर - विश्व में इतनी आत्मायें हैं लेकिन उन आत्माओं में से आप थोड़ी आत्मायें यहाँ पहुँची हो। यह भी बहुत तकदीर की निशानी है। शान्ति कुण्ड में पहुँच गये। शान्ति तो सभी को आवश्यक है ना।

प्रश्न - मानव की विशेषता क्या है?
उत्तर - स्वयं भी शान्त और सर्व को भी शान्ति देते रहें, यही मानव की विशेषता है। अगर शान्ति नहीं तो मानव जीवन ही क्या है। आत्मिक, अविनाशी शान्ति। स्वयं को और अनेकों को भी सच्ची शान्ति प्राप्त करने का रास्ता बता सकते हो।

प्रश्न - पुण्य आत्मा कैसे बन जायेंगे?
उत्तर - किसी अशान्त आत्मा को शान्ति दे दो तो कितना बड़ा पुण्य है। स्वयं पहले भरपूर बनो फिर औरों के प्रति भी पुण्यात्मा बन सकते हो। इस जैसा पुण्य और कोई नहीं। दु:खी आत्माओं को सुख शान्ति की झलक दिखा सकते हो।

प्रश्न - दिल का संकल्प कैसे पूरा होता है?
उत्तर - जहाँ लगन है वहाँ दिल का संकल्प पूरा हो जाता है। अभी बाप द्वारा जो सन्देश मिला है वह सन्देश सुनाने वाले सन्देशी बनकर चलते रहो।

सेवाधारियों से

प्रश्न - सेवा की लाटरी क्या करती है?
उत्तर - सदाकाल के लिए सम्पन्न बना देती है।
● सेवा से सदाकाल के लिए खजाने से भरपूर हो जाते हैं। सभी ने नम्बरवन सेवा की। सब फर्स्ट प्राइज लेने वाले हो ना!

प्रश्न - फर्स्ट प्राइज़ क्या है?
उत्तर - सन्तुष्ट रहना और सर्व को सन्तुष्ट करना। तो क्या समझते हो, जितने दिन सेवा की उतने दिन स्वयं भी सन्तुष्ट रहे और दूसरों को भी किया या कोई नाराज़ हुआ? सन्तुष्ट रहे और सन्तुष्ट किया तो नम्बरवन हो गये।

प्रश्न - हर कार्य में विजयी बनना अर्थात् क्या?
उत्तर - नम्बरवन होना। यही सफलता है। न स्वयं डिस्टर्ब हो और न दूसरों को करो, यही विजय है। तो ऐसे सदा के विजयी रत्न।

प्रश्न - विजय संगमयुग का अधिकार है क्यों?
उत्तर - क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिवान हो ना!

प्रश्न - सच्चे सेवाधारी कौन हैं?
उत्तर - वह जो सदा रूहानी दृष्टि से, रूहानी वृत्ति से रूहे गुलाब बन रूहों को खुश करने वाले हों। तो जितना समय भी सेवा की उतना समय रूहानी गुलाब बन सेवा की? कोई बीच में कांटा तो नहीं आया।

प्रश्न - सदा ही रूहानी स्मृति में रहे अर्थात् क्या?
उत्तर - रूहानी गुलाब स्थिति में रहे। जैसे यहाँ यह अभ्यास किया वैसे अपने-अपने स्थानों पर भी ऐसे ही श्रेष्ठ स्थिति में रहना। नीचे नहीं आना। कुछ भी हो, कैसा भी वायुमण्डल हो लेकिन जैसे गुलाब का पुष्प कांटों में रहते भी स्वयं सदा खुशबू देता, कांटों के साथ स्वयं कांटा नहीं बनता। ऐसे रूहानी गुलाब सदा वातावरण के प्रभाव से न्यारे और प्यारे।

प्रश्न - वहाँ जाकर क्या नहीं लिखना?
उत्तर - कि क्या करें माया आ गई। सदा मायाजीत बनकर जा रहे हो ना। माया को आने की छुट्टी नहीं देना। दरवाजा सदा बन्द कर देना। डबल लाक है याद और सेवा, जहाँ डबल लाक है। वहाँ माया नहीं आ सकती है।

अपने आपको ही प्यार कर लेना

दादी जी तथा अन्य बड़ी बहनों से - जैसे बाप सदा बच्चों का उमंग-उत्साह बढ़ाते रहते वैसे फालो फादर करने वाले बच्चे हैं। विशेष सभी टीचर्स को देश-विदेश से जो भी आई, सबको बापदादा सेवा की मुबारक देते हैं। हरेक अपने को नाम सहित बाप के याद और प्यार के अधिकारी समझकर अपने आपको ही प्यार कर लेना। एक-एक के गुण गायें तो कितने के गुण गायें। सभी ने बहुत मेहनत की है। अगले वर्ष से अभी उन्नति को प्राप्त किया है और आगे भी इससे ज्यादा से ज्यादा स्वयं और सेवा से उन्नति को पाते रहेंगे। समझा - ऐसे नहीं समझना कि हमको बापदादा ने नहीं कहा, सभी को कह रहे हैं।

आपका नाम बाप के मुख पर है

भक्त बाप का नाम लेने के लिए प्रयत्न करते रहते हैं, सोचते हैं बाप का नाम मुख पर रहे लेकिन बाप के मुख पर किसका नाम रहता? आप बच्चों का नाम बाप के मुख पर है, समझा। अच्छा।

डबल विदेशी भाई बहिनों के प्रश्न - बापदादा के उत्तर

प्रश्न - इस वर्ष की सेवा के लिए नया प्लैन क्या है?

उत्तर - समय को समीप लाने के लिए एक तो वृत्ति से वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाने की सेवा करनी है। इसके लिए स्व की वृत्ति पर विशेष अटेन्शन देना है और दूसरा औरों की सेवा करने के लिए विशेष ऐसी आत्मायें निकालो जो समझें कि सचमुच शान्ति की विधि यहाँ से ही मिल सकती है। यह आवाज इस वर्ष में हो कि अगर शान्ति होगी तो इसी विधि से होगी। एक ही विधि है यह, जो विश्व को आवश्यकता है - वह इस विधि के सिवाए नहीं है। यह वातावरण चारों ओर इकठ्ठा बनना चाहिए। भारत में चाहे विदेश में शान्ति की झलक प्रसिद्ध रूप में होनी चाहिए।

सभी को टच हो

चारों ओर से यह सभी को टच हो, आकर्षण हो कि यथार्थ स्थान है तो यही है। जैसे गवर्मेन्ट की तरफ से यू.एन.ओ. बनी हुई है तो जब भी कुछ होता है तो सभी का अटेन्शन उसी तरफ जाता है। ऐसे जब भी कोई अशान्ति का वातावरण हो तो सबका अटेन्शन शान्ति का सन्देश देने वाली यह आत्मायें हैं, इस तरफ जावे। अनुभव करें कि अशान्ति से बचने का यही एक स्थान है, जहाँ पनाह ली जा सकती है। इस वर्ष यह वायुमण्डल बनना चाहिए।

असली प्राप्ति यहाँ से ही होनी है

ज्ञान अच्छा है, जीवन अच्छी है, राजयोग अच्छा है, यह तो सब कहते हैं लेकिन असली प्राप्ति यहाँ से ही होनी है, विश्व का कल्याण इसी स्थान और विधि से होना है, यह आवाज बुलन्द हो। समझा- इसके लिए विशेष शान्ति की एडवरटाइज करो, किसको शान्ति चाहिए तो यहाँ से विधि मिल सकती है। शान्ति सप्ताह रखो, शान्ति के समागम रखो, शान्ति अनुभूति के शिविर रखो, ऐसे शान्ति का वायब्रेशन फैलाओ।

अनुभव की वर्कशाप

सर्विस में जैसे स्टूडेन्ट बनाते हो वह तो बहुत अच्छा है, वह तो जरूर वृद्धि को प्राप्त करना ही है। लेकिन अभी हर वैरायटी के लोग जैसे काले गोरे भिन्न-भिन्न धर्म की आत्मायें हैं, वैसे भिन्न-भिन्न आक्यूपेशन वाले हर स्थान पर होने चाहिए। कोई कहाँ भी जावे तो हर आक्यूपेशन वाला अपनी रीति से उन्हें अनुभव सुनाये। जैसे यहाँ वर्कशाप रखाते हैं - कभी डाक्टर की, कभी वकील की तो भिन्न-भिन्न आक्यूपेशन वाले एक ही शान्ति की बात अपने आक्यूपेशन के आधार से बोलते हैं तो अच्छा लगता है। ऐसे कोई भी सेन्टर पर आवें तो हर आक्यूपेशन वाले अपना शान्ति का अनुभव सुनायें, इसका प्रभाव पड़ता है। सभी आक्यूपेशन वालों के लिए

यह सहज विधि है, यह अनुभव हो। जैसे कुछ समय के अन्दर यह एडवरटाइज अच्छी हो गई है कि सब धर्म वालों के लिए यही एक विधि है, यह आवाज हो। इसी रीति से अभी आवाज फैलाओ। जो सम्पर्क में आते हैं या स्टूडेन्ट हैं उन्हों तक तो यह आवाज होता है लेकिन अभी थोड़ा और चारों ओर फैले इसका अभी और अटेन्शन।

थोड़ी स्पीड और तेज होनी चाहिए

ब्राह्मण भी अभी बहुत थोड़े बने हैं। नम्बरवार ब्राह्मण बनने की जो यह गति है, उसको फास्ट नहीं कहेंगे ना। अभी तो कम से कम नौ लाख तो चाहिए। कम से कम सतयुग की आदि में नौ लाख के ऊपर तो राज्य करेंगे ना! उसमें प्रजा भी होगी लेकिन सम्पर्क में अच्छे आयेंगे तब तो प्रजा बनेंगे। तो इस हिसाब से गति कैसी होनी चाहिए! अभी तो संख्या बहुत कम है। अभी टोटल विदेश की संख्या कितनी होगी? कम से कम विदेश की संख्या दो-तीन लाख तो होनी चाहिए। मेहनत तो अच्छी कर रहे हो, ऐसी कोई बात नहीं है लेकिन थोड़ी स्पीड और तेज होनी चाहिए। स्पीड तेज होगी - जनरल वातावरण से। अच्छा।

प्रश्न - पावरफुल वातावरण बनाने की युक्ति क्या है?
उत्तर - स्वयं पावरफुल बनो। उसके लिए अमृतवेले से लेकर हर कर्म में अपनी स्टेज शक्तिशाली है या नहीं, उसकी चेकिंग के ऊपर और थोड़ा विशेष अटेन्शन दो।

अपने ऊपर विशेष अटेन्शन

दूसरों की सेवा में या सेवा के प्लैन्स में बिजी होने से अपनी स्थिति में कहाँ-कहाँ हल्कापन आ जाता है इसलिए यह वातावरण शक्तिशाली नहीं होता। सेवा होती है लेकिन वातावरण शक्तिशाली नहीं होता है। इसके लिए अपने ऊपर विशेष अटेन्शन रखना पड़े।कर्म और योग, कर्म के साथ शक्तिशाली स्टेज, इस बैलेन्स की थोड़ी कमी है।

कर्म और योग का बैलेन्स हो

सिर्फ सेवा में बिजी होने के कारण स्व की स्थिति शक्तिशाली नहीं रहती। जितना समय सेवा में देते हो, जितना तन-मन-धन सेवा में लगाते हो, उसी प्रमाण एक का लाख गुणा जो मिलना चाहिए वह नहीं मिलता है। इसका कारण है, कर्म और योग का बैलेन्स नहीं है। जैसे सेवा के प्लैन बनाते हो, पर्चे छपाते हो, टी.वी., रेडियो में करना है। जैसे वह बाहर के साधन बनाते हो वैसे पहले अपनी मंसा शक्तिशाली बनाने का साधन विशेष होना चाहिए। यह अटेन्शन कम है। फिर कह देते हो, बिजी रहे इसलिए थोड़ा-सा मिस हो गया। फिर डबल फायदा नहीं हो सकता। अच्छा।

84 स्वमान from AM 14-10-2018

1. मैं अमूल्य जीवनधारी ब्राह्मण हूं।

2. मैं सदा परमात्म स्नेह में समाई हुई आत्मा हूं।

3. मैं स्नेह के सागर में समाई हुई आत्मा हूं।

4. मैं बाप समान अशरीरी निराकार हूं।

5. मैं बाप समान आकारी फरिश्ता हूं।

6. मैं सदा बाप के संग के रंगी हुई आत्मा हूं।

7. मैं फालो फादर आत्मा हूं।

8. मैं आज्ञाकारी आत्मा हूं।

9. मैं वफादार आत्मा हूं

10. मैं फरमानबरदार आत्मा हूं।

11. मैं सच्चा-सच्चा अमूल्य रत्न हूं।

12. मैं बापदादा के गले की माला का विजयी रत्न हूँ।

13. मैं नशे और खुशी में रहने वाली आत्मा हूं।

14. मैं बापदादा का चुना हुआ रत्न हूं।

15. मैं बाप का ढूँढा हुआ रत्न हूं।

16. मैं तुम्हीं से बैठूँ, तुम्ही से खाऊं, तुम्हीं से सदा साथ रहूँ यही गीत गाने वाली आत्मा हूं।

17. मैं सच्ची अविनाशी प्राप्ति वाली आत्मा हूं।

18. मैं निरन्तर प्राप्ति स्वरूप आत्मा हूं।

19. मैं बाप की गोदी में बैठने वाली हूं।

20. मैं हर कदम श्रीमत पर चलने वाली हूं।

21. मैं दर्शनीयमूर्त आत्मा हूं।

22. मैं सेकण्ड की दृष्टि से प्यास बुझाने वाली आत्मा हूं।

23. मैं साक्षात साक्षात्कार स्वरूप आत्मा हूं।

24. मैं श्रेष्ठ जीवनधारी आत्मा हूं

25. मैं श्रेष्ठ प्राप्ति स्वरूप आत्मा हूं।

26. मैं अलबेलेपन और साधारणता से मुक्त आत्मा हं।

27. मैं श्रेष्ठता और विशेषता सम्पन्न आत्मा हूं

28. मैं बापदादा से मिले हुए खजानों से सम्पन्न आत्मा हूं।

29. मैं हर सेकण्ड, जन्म-जन्म की प्रालब्ध बनाने वाली आत्मा हूं।

30. मैं अमूल्य जीवन वाली श्रेष्ठ आत्मा हूं।

31. मैं श्रेष्ठ तकदीरवान विशेष आत्मा हूं।

32. मैं सदा याद स्वरूप आत्मा हूं।

33. मैं सदा बाप से मिलन मनाने वाली आत्मा हूं

34. मैं सदा बाप के संग के रंग में रहने वाली आत्मा हूं।

35. मैं बापदादा का सिकीलधा बच्चा हूं

36. मैं बापदादा का सपूत बच्चा हूं।

37. मैं भाग्यवान आत्मा हूं।

38. मैं श्रेष्ठ भूमि पर आने वाला सबसे बड़ा भाग्यवान हूं।

39. मैं महान तीर्थ भूमि की निवासी भाग्यवान आत्मा हूं।

40. मैं सदा याद में रहने वाली आत्मा हूं।

41. मैं सदा परमात्म सम्बन्ध में रहने वाली आत्मा हूं।

42. मैं विश्व को खुशी और शान्ति देने वाली आत्मा हूं।

43. मैं आत्मा राजयोग की अभ्यासी हूं।

44. मैं आत्मा खुशी की खान हूं।

45. मैं सबको सच्ची खुशी बांटने वाली आत्मा हूं।

46. मैं आत्मा शान्ति कुण्ड हूं।

47. मैं शान्तिदाता आत्मा हूं।

48. मैं अनेकों को सच्ची शान्ति प्राप्त कराने वाली आत्मा हूं।

49. मैं पुण्य आत्मा हूं।

50. मैं शान्ति से भरपूर आत्मा हूं।

51. मैं लगन से दिल का संकल्प पूरा करने वाली आत्मा हूं।

52. मैं सेवा की लाटरी से सम्पन्न आत्मा हूं

53. मैं सेवा के खजाने से भरपूर आत्मा हूं।

54. मैं फर्स्ट प्राइज़ लेने वाली सन्तुष्ट रहने और सबको संतुष्ट करने वाली आत्मा हूं।

55. मैं सदा का विजयी रत्न हूं।

56. मैं मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूं।

57. मैं सदा रूहानी दृष्टि वाली आत्मा हूं।

58. मैं रूहानी वृत्ति वाला रूहे गुलाब हूं।

59. मैं कांटों में रहकर भी मुस्कुराता हुआ गुलाब का पुष्प हूं।

60. मैं रूहानी गुलाब सदा वातावरण के प्रभाव से न्यारा और प्यारा हूं।

61. मैं सदा मायाजीत आत्मा हूं।

62. मैं याद और सेवा के डबल लॉक के अंदर रहने वाली आत्मा हूं।

63. मैं बाप के याद और प्यार की अधिकारी आत्मा हूं।

64. मेरा नाम बाप के मुख पर है।

65. मैं वृत्ति से वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाने वाली आत्मा हूं।

66. मैं स्व की वृत्ति पर विशेष अटेन्शन देने वाली आत्मा हूँ।

67. मैं औरों की सेवा करने के लिए विशेष आत्मा हूं।

68. मैं शान्ति का सन्देश देने वाली आत्मा हूं।

69. मैं असली प्राप्ति कराने वाली विश्व कल्याणकारी आत्मा हूं।

70. मैं विशेष शान्ति की एडवरटाइज करने वाली आत्मा हूं।

71. मैं शान्ति का वायब्रेशन फैलाने वाली आत्मा हूं।

72. मैं शान्ति का अनुभव कराने वाली आत्मा हूं।

73. मैं पावरफुल वातावरण बनाने वाली आत्मा हूं।

74. मैं अमृतवेले से हर कर्म में अपनी स्टेज पर शक्तिशाली रहने वाली आत्मा हूं।

75. मैं कर्म और योग का बैलेन्स रखने वाली आत्मा हूं।

76. मैं सेवा द्वारा प्राप्त मान मर्तबे से मुक्त आत्मा हूं।

77. मैं अविनाशी भाग्य बनाने वाली महात्यागी आत्मा हूं।

78. मैं श्रेष्ठ कर्म करने वाली आत्मा हूं।

79. मैं ईश्वरीय सेवाधारी हूं।

80. मैं त्यागवान आत्मा हूं।

81. मैं भाग्यवान आत्मा हूं।

82. मैं गुप्त महादानी आत्मा हूं।

83. मैं साक्षीद्रष्टा आत्मा हूं।

84. मैं निरन्तर सकाश देने वाला फरिश्ता हूं।